मध्य महाविद्यालय
रश्मिका

मानवेन्द्र नाथ राय
MANAVENDRA NATH ROY

भारत के समाजवादी चिन्तकों में मानवेन्द्र नाथ राय का स्थान विशिष्ट है। उन्होंने हमारे समक्ष नव-मानवतावाद का सिद्धांत प्रस्तुत किया जो राजनीतिक विचारों के संबंध एक नवीन योगदान माना जा सकता है। मानवेन्द्र नाथ राय ने भौतिकवाद की भी व्याख्या की और इसे नैतिकता प्रदान किया। व्यक्ति की स्वतंत्रता और समानता का उद्घोष करके उन्होंने व्यक्ति की गरिमा को आगे बढ़ाया।

मानवेन्द्रनाथ राय की रचनाएं एवं विचारधाराएँ

एम. एन. राय न केवल एक राजनीतिक कार्यकर्ता थे बल्कि एक लेखक एवं विचारक भी थे। उन्होंने कई पुस्तकें भी लिखी। 1922 में राय ने अपनी पुस्तक 'इंडिया इन ट्रांजीशन' में समकालीन भारत का समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत किया है। 1922 के अन्त में राय ने 'इण्डियाज प्राब्लम्स एण्ड देयर सोल्यूशन' नाम पुस्तक प्रकाशित की। इस पुस्तक में उन्होंने पूर्णतः मार्क्सवादी दृष्टि से गांधीवादी सामाजिक विचारधारा की मध्ययुगीनता तथा पुरातनवाद की आलोचना की। 1923 में राय ने 'वन इयर आफ नान-कोऑपरेशन' नामक पुस्तक प्रकाशित की है। इसमें उन्होंने महात्मा गांधी को यद्यपि तुल्य व्यक्तित्व मानते हुए उनकी ~~थामस~~ तुलना संत थामस, रवीन्द्रनाथ से की। उन्होंने गांधीजी के

चार रचनात्मक जोरदार स्वीकार किये — (1) राजनीतिक
लक्ष्यों के लिए धार्मिक कार्यवाही का प्रयोग,
(2) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का एकीकरण (3)
अहिंसा के नारे द्वारा सरकारी दमन से राष्ट्रीय
शक्ति को मुक्त करना और (4) आत्मबोध से
ताकतों को न उकसाने तथा सविनय अवज्ञा के तरीकों
का प्रयोग। किन्तु रॉय ने अपनी पुस्तक में
गांधीवाद की बहुत सारी कमियों पर प्रकाश
डाला जैसे — (1) गाँधीवाद में जनता का समर्थन
प्राप्त करने के लिए कोई आर्थिक कार्यक्रम नहीं था।
(2) राजनीतिक कार्यवाही धार्मिक सिद्धांतों का समावेश
करना (3) चरखे का प्रतिक्रियावादी उपयोग, आदि।
उनके शब्दों में गांधीवाद, क्रान्तिवाद नहीं है बल्कि
सुधारवाद है।

1926 में रॉय ने "दि फ्यूचर ऑफ इण्डियन पॉलिटिक्स"
नामक पुस्तक लिखी जिसमें उसने एक जनवादी
पार्टी का महत्व प्रतिपादित किया। रॉय की अन्य
प्रमुख रचनाएँ हैं — मेटेरियालिज्म, साइण्टीफिक
पॉलीटिक्स, रेशनलिज्म एण्ड डेमोक्रेसी, न्यू
ह्यूमनिज्म, फासीज्म, व्हाट इज मार्क्सिज्म
आदि।

रॉय ने, आर्थिक शोषण के प्रत्येक रूप का विरोध
किया। वे आर्थिक नियोजन के पक्ष में हैं किन्तु
नियोजन की समाजवादी एवं पूंजीवादी पद्धति
को अमान्य ठहराते हैं। रॉय स्वभाव से ही
मनुष्य को सहयोगी प्राणी के रूप में देखते है
इसी कारण से उत्पादन के साधनों का नियंत्रण
जनता में ही निहित करना उचित मानते हैं।